

## ७. अनमोल वचन

- दादू दयाल

गुरु पहली मन सौ कहै, पीछे नैन की सैन ।  
दादू सिख समझै नहीं, कहि समझावै बैन ॥

दादू दीया है भला, दिया करो सब कोय ।  
घर में धरा न पाइये, जो कर दिया न होय ॥

ना घरि रह्या न बनि गया, ना कुछ किया कलेस ।  
दादू मन-ही-मन मिल्या, सतगुरु के उपदेस ॥

यहु मसीति यहु देहुरा, सतगुरु दिया दिखाइ ।  
भीतरि सेवा बंदिगी, बाहरि काहे जाइ ॥

फल पाका बेली तजी, छिटकाया मुख माँहि ।  
साँई अपणा करि लिया, सो फिरि ऊगौ नाँहि ॥

दादू इस संसार मैं, ये द्वै रतन अमोल ।  
इक साँई इक संतजन, इनका मोल न तोल ॥

मेरा बैरी 'मैं' मुवा मुझे न मारै कोई ।  
मैं ही मुझकोँ मारता, मैं मरजीवा होई ॥

दादू आपा जब लगै, तब लग दूजा होई ।  
जब यहु आपा मरि गया, तब दूजा नहिं कोई ॥

### परिचय

**जन्म :** १५४४, अहमदाबाद  
(गुजरात)

**मृत्यु :** १६०३

**परिचय :** गृहस्थी त्यागकर इन्होंने १२ वर्षों तक कठिन तप किया । गुरुकृपा से सिद्धि प्राप्त हुई । 'दादू' के नाम से 'दादू पंथ' चल पड़ा । आप अत्यधिक दयालु थे । इस कारण आपका नाम 'दादू दयाल' पड़ गया । आप हिंदी, गुजराती, राजस्थानी आदि कई भाषाओं के ज्ञाता थे । आपने शब्द और साखी लिखीं । आपकी रचनाएँ प्रेमभावपूर्ण हैं । जाति-पाँति के निराकरण, हिंदू-मुसलमानों की एकता आदि विषयों पर आपके पद तर्क प्रेरित न होकर, हृदय प्रेरित हैं ।

**प्रमुख कृतियाँ :** 'साखी', 'हरडेवानी', 'अंगवधू' आदि ।

### पद्य संबंधी

प्रस्तुत 'साखी' (दोहों) में दादू जी ने परोपकार, सद्गुरु का महत्त्व, सेवाभाव, सत्संग, अहंकार से बचने आदि के संबंध में अनमोल मार्गदर्शन किया है ।

### कल्पना पल्लवन

'वर्तमान युग की माँग विश्वशांति' पर अपना मत लिखो ।

## शब्द वाटिका

सैन = इशारा  
बैन = वाणी, शब्द  
दीया = दीपक  
घीव = घी  
कलेस = कष्ट, दुख

बंदिगी = वंदना, सम्मान, पूजा  
पाका = पका  
द्वै = दोनों  
मुवा = मृत, समाप्त  
आपा = अहं, घमंड

\* सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-

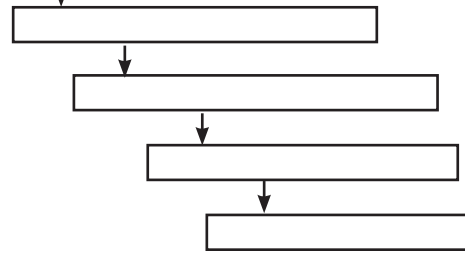
(१) उत्तर लिखो :

१. गुरु अपनी सीख किस प्रकार समझाते हैं ?
२. दान देना क्यों आवश्यक है ?
३. संसार में कौन-से दो रत्न अमूल्य हैं ?
४. दादू जी ने बैरी किसे कहा है ?

(२) पद्यांश में इस अर्थ में आए शब्द लिखो :

१. नयन = -----
२. कष्ट = -----
३. शत्रु = -----
४. मरना = -----

(३) दादू जी द्वारा दी गई सीख



(४) किन्हीं दो पंक्तियों के अर्थ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

जीवन में सत्संगति आवश्यक है ।

भाषा बिंदु

कृदंत और तद्धित शब्दों की सूची बनाकर उनके मूल शब्द अलग करो ।



उपयोजित लेखन

अंतरशालेय नाट्यस्पर्धा में नाटक का मंचन करने हेतु 'ड्रेपरी हाऊस' के व्यवस्थापक को पात्रों के अनुरूप आवश्यक वेशभूषाओं की माँग करते हुए पत्र लिखो ।

मैंने समझा



स्वयं अध्ययन

कबीरदास के ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा इन भावों की व्यर्थता दर्शाने वाले दोहों को अर्थसहित लिखो ।